कोरोना

डॉ. सुनीति मुंड

(एक)

बाहर संक्रमण
अनजाने रोग का,
शहर में कर्फ्यू लगा
किवाड़ बंद कर लो,
नगर वासियो
आ रहा भूताणु !
निगल जायेगा समूचा
कोमल हृदय धड़कता ।

शोर मचा हुआ
बाहर खांडव वन दहन
अफवाह के भूत का भय !
हर तरफ सांय-सांय सुनसान !

जीवन न था, साधन न था
जीविका किवाड़ बंद कर बैठी ।
सहमी जिजीविषा ।

ताकीद हुई,
बांध लिया सुरक्षा कवच
जुरमाना, जेलदंड
भोगना पड़ा।
कहाँ कैसे कुछ जिदखोर लोग
खा रहे, फिर रहे
जेल जा रहे ।
जारी हुआ शासन का अदब कायदा ।

संगरोध, अवरोध
तालाबंदी जारी थी,
आत्मबंदी, जवान बंदी ।

चालू रही
बात न मानने वाले की पीठ पर
बरसे बेंत -कोड़े।

आँख -कान-मुँह बन्द
बैठे तीन बंदर
तोड़ी लोहे की बाड़
पीया पानी महानदी का
कोरोना राक्षस मुक्ति परोसेगा ।
जनजीवन से मांगेगा
वह लेगा फिरौती ।

तब अब
सांय-सांय शहर !
विचलित मन प्राण
जीवन थरथरा रहा ।

अनजान आतंक से
बचने का
नहीं कोई आसार ।
समय लाचार ।
घड़ी, दिन, वर्ष, माह

बीत जाते, आतंक का
नहीं कोई उपचार ।

कर्फ्यू ! कर्फ्यू !
चारों ओर कर्फ्यू !
सारे शहर में कर्फ्यू !
देह और मन पर भी कर्फ्यू !

◆

(दो)

आतंक को कोई उत्तर नहीं
नित्य आदमी मरता
बेशुमार लाशें आदमी की ।
हा-हुताश चित्त
विज्ञान नहीं माप पाता
कैसा आतंक का हिसाब
जटिल वीजगणित देखता ।

टलमल हो रहे पृथ्वी के पांव ।
इटली, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका,

रूस, जापान, स्पेन
और जर्मनी
चकरा रहे सब के सिर
ढेरों ढेर मज्जा मांस
अंबार लगा हाड़ों का
सब जगह दिखते
मृत्यु के पहाड़ ।

चारों ओर आतंक का साया
मरण की विभीषिका
आतंकी भूत भय
विज्ञानी आदमी
असमर्थ लाचार
चारों ओर भूताणु का भय ।

जीवन, हा - हुताशसय
जीना : सामाजिक और
सामग्रिक दूरी का
खेल भोग विलास का ।

◆

(तीन)

वाइरस ! वाइरस !
शोर मचा
हाथ कस कर थाम
राह खोजता !
विजय पताका के लिए
लाश को पकड़ता,
छाती में धंसता
ऊष्म छुअन में पिघल जाता ।

यह वाइरस कैसा ?
साबुन के झागों में मरता !

सिपाही, शव के पहाड़ लांघ
राह रोकता
बंद नाक-मुँह पर
बाड़ लगता ।

मार .... मार !
इसे हाथ से मारो
सेनीटाइजर से मारो
लगाओ .... लगाओ !
मुँह पर पट्टी
गले में रस्सी
नाक में नकेल,
ढवकन लगा
राह में लगा बेरीकेड ।

◆

(चार)

कोरोना ! कोविड -१९ !!
डरे तो राह भटका दे
डराये पास न फटके,
ये कैसा वाइरस ?
मौसम देख वंश फैलाता
अवस्थिति बदलता
आते जाते को पकड़ता ।

तपती ग्रीष्म दुपहरी में
कोरोना का प्रकोप
पेट में भूख
छाती में घोर आतंक ।

डराता कौन.... ?
भूख या भय
भूत या भात ?
भात कहाँ भात
कहाँ पर है पत्तल
स्पेन में, इटली में,
इंग्लैंड या अमेरिका में
या सोवियत रूस में
कहाँ, किस देश में ?

जीवन की विजय यात्रा छिन्न भिन्न
कोरोना की दहाड़ ब सन्न-सन्न ।

◆

(पांच)

चलो धरती की ओर
गांव को लौट चलें
धरती के गुण बखानें ।

मजूरी करती न उच्चाट
पेट के लिए नहीं खेल,
पुकार रही धरती
लौटता प्रवासी आदमी
लेने माटी का आश्लेष ।

पाद और पृथ्वी के छंद में
कांप गया भूलोक, द्युलोक,
वर्षा में भीगे, धूप में तपे
सीझ गये पांव जलती धूप में ।

जूझता आदमी
लड़ता लड़ाई जीवन की
महाजीवन का भ्रूण होता नाश ।
सारे जगत में जन्म से
मशान तक जली
जीवन ज्योति, जीवन नहीं अनाथ
नहीं असहाय ।

लाओ -लाओ !
उन्हें टुकड़ा-टुकड़ा ले आओ
इस धरा के महातृण
मरें - चाहे मरें
इस माटी में मिलें

देश विदेश से छूटे यान
बढ़ी बेकारी, बेरोजगारी
प्रवासी का गुणात्मक ज्ञान ।

स्वप्न और स्वप्नभंग की संधि पर
चलता रहा हा- हुताशन
उन्हें ढो लाओ
बोरी -बस्ते ले आओ ।
एक सौ पैंतीस कोटि से
जुड़ी भूख-न्यास
बेकारी बेरोजगारी
भाग्य लिपि का लेख ।

◆

(छ:)

वे आये
संगरोध हुआ
संख्याधिक पाजिटिव के बाद
स्वास्थ्य सेवा और
वेंटिलेटर के अभाव में
खोया जीवन ।

चौदह दिन का खेल
कोई गया कई रहे
भिन्न -भिन्न नाम दर्ज हुये ।

होटल, अपार्टमेंट, रेलवे की बोगी
बन गए कोविड सेंटर
जिसे जहाँ मिली विकल हो
प्राण सम्हाले ।

कोरोना की आफत रोकने
विश्वव्यापी निदान खोजने
हाइड्रोक्लोरीन के लिए
आये भारत की शरण
मानव जाति की सुरक्षा के लिए
एकत्रित सब हुये ।

◆

(सात)

गाड़ी घोड़ा सब बंद ....
रास्ते, दुकान बजार
दफ्तर, सिनेमा हॉल बंद
मॉल, रेस्तोरां, मंदिर मदिरालय
रंग रास, पर्यटन, चित्त विनोदन ।

भूख ... भूख !
कैसी भयंकर है भूख ?
कैसी यह बंदी है,
सारे बंद पर भी
चल रहा संक्रमण,
ज्वार- सा उफनता मरण का मुहाना
न मारो लात, पेट को दे भात,

देह को दो कपड़ा
छत सिर छुपाने को
दो रोटी, कपड़ा मकान
प्रवास से बह रहा
जीवन और यातना का स्रोत ।

सरकारी और गैरसरकारी सब
हाथ में हाथ मिला
भूख को वश किया, वेश दिया ।
भूखे पेट को, अधनंगी काया को
शासक और शोषक सेवा में लगे
कोरोना योद्धा कहलाये ।

तुम मास्क पहनो
ग्लोब्स पहनो
कोरोना दानव का
भरता नहीं पेट
ग्रसा, ग्रस रहा, ग्रसेगा
शायद तुम वश में आओ :
गले की राह खोजता
तुम्हारी प्रतिरोधक शक्ति के सामने
परास्त हो रहा ।

◆

(आठ)

लॉक डाउन, सटडाउन !
गृह बंदी, आकुल -व्याकुल
असहनीय समय
देहरी इस पार मृत्यु
असहाय, लाचार जीव
बंद कोठरी से बंदी
दीर्घ दिन ..... हाय !

चारों ओर छटनी .... छटनी !
छोटी हुई अर्थ और क्षमता की लड़ाई
सारे रोजगार आय -व्यय के रास्ते में छटनी

देश अपनी -अपनी राह जाते
लोगों की खबर लेते
भारत में, रेल डब्बे और
जंगल में जीवन जीते ।

ग्रोसरी, औषधि, सब्जी बजार
सेवकों ने किया उपचार
आने के रास्ते बंद किये जितने
तनाव में, दबाव में दिन कटे
बढ़ा : आत्मदाह, आत्म हत्या को सिलसिले ।

सरकार ने हाथ उठा दिये,
विश्व उदासीन अर्थनीति का किया सामना
सरकारी खजाना हो गया खाली,
बढ़ी आय -व्यय की चिंता
भूख और भय की संधि घड़ी में
आदमी जूझंता रहं जाता।

◆

(नौ)

कोरोना का कराल रोकने
देह में शक्ति भरने,
बढ़ा देसी उपचार का प्रयोग ।
नीबू, काली मिरच
तुलसी, गिलोय, च्यवनप्राश
खोज -खोज लाये पराजित करने के अस्त्र
सारे उपचार ।

काढ़े के सत्व में बना
खोज -खाज ले आओ
प्रकृति का पराभय

आतंक का तांडव रचा है
देखो -देखो ...
विश्व आज दहल रहा !

ऋषि-मुनियों का ध्यान सारा
सारे शारीरिक व्यायाम
लौटाकर पुराने दिनप
आज आदमी जूझ रहा
पुराने रीति-रिवाज
प्रयोग कर
पतांजलि योग, प्राणायाम

किस देश में कितने मरे
कितने गए
बेशुमार गिनती जारी है
भय में थर्रा रहा ।

◆

(दस)

मारो.... पीटो.. ! चीन को पकड़ो
यहाँ लगाई है लीला
सांप, मेंढ़क, कीट -पंतग ग्रसे
कोरोना अस्त्र से विश्व को नशाया
ये कैसा विश्व में आतंक मंचाया ।

नष्ट करो उसकी योजना
भारत अमेरिका, वियतनाम, जापान
दक्षिण कोरिया फिलिपींस
हाथ मिला लिये,
कांपता ड्रेगन !
पागल -सा गलवान में
करता है आक्रमण ।

विश्व योजना बरबाद करने
चेतना ने जोड़ा
कोरोना के गाल में पागल हुई सोच
भारत की सीमा लांघी
बीस सैनिक मारे
रक्त रंजित गलवान नदी ।

भारत में अब सिंह राज
कोरोना कराल में भी तैयार
यह है भारत वर्ष,
पहुँच गया डर
सहम गया मन,
किया है अभिनय
खेल उसका ।
छोड़ेगा नहीं भारत अब

भारत को उसका डर
कहता केवल बार-बार
मैत्री का भाव दिखाता
कोरोना दानव उत्पन्न कर
कर रहा राह भूला ।

◆

(ग्यारह)

अजान रोग पर विश्व ने पुकारा
त्राहिमाम् - त्राहिमाम्....!
पहचान में आ गई विश्व को
किस स्वच्छ जल में
बूढ़ी असुरनी का जीवन
संचित रखेगी अब ?

रे रे...चीन!
जानता नहीं क्या जीवन रंग लीला !
इंद्रधनुष का मिलित खेल अब
विश्व में ;

एकछत्र विस्तार की
सफल होगी नहीं योजना !

नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान
बंगलादेश,
मिला कर तेरी
यह कैसी विरोधी योजना !

सीमा पर युद्ध का आतंक
देश में करोना का भय,
राम मंदिर स्वप्न में विभोर
भारत वर्ष !
हे महाकाल ग्रास करो
यह महाभाव : बनो सहाय
अपसारित हो दु:समय !

◆

(बारह)

आक्रांत मृत, आरोग्य
आह... बहुत हो गई गणना
दस्तक, सतर्क, ताकीद पर भी
कैसे -कैसे
जीवन समेट रहा करोना ।

कोरो़ना
मानव जाति के विध्वंस की विडंबना
निलच्च विभीषिका
भयंकर भूत
अमानवीयता के भोग का खेल

क्षत और क्षति की खेती
उपभोक्ता की बेड़ी पर
कोड़ों की मार,
महंगाई के बजार में
तोड़ दिये दिहाड़ी मजूरों
के पंजर हाड़ ।

कोरो़ना
विकराल दानव के
कितने रूप कितने रंग
उसका गर्भगृह कितना विस्मय भरा
जीव, जीवाणु या भूताणु
ले रहा जीवन,
मानव जाति का
करना चाहता सर्वनाश
करना चाहता शेष ।

दो वर्ष गर्भ में हुआ विस्फोरित
बुहान की लेबारेटरी ;
जीवन मृत्यु खेल में रत
स्वयं पहला शिकार ।

ऐसा कालकूट है
लो तुम पुन: अवतार
सृष्टि संरचना की रक्षा करने
पान करो यह हलाहल
राष्ट्र मिल कर भूत को शेष करो
हो चाहे चीन सर्वनाश ।

◆

(तेरह)

आह कहाँ गए
आदमी सारे
यहाँ फिरते थे
बंधे -जुड़े रहते थे ।

तपस्या में बैठ गए
या फिर जन्म ले अवतरित हो रहे
असमय टालने को
ईश्वर की ओर चले
साधना में मैंन रह गए ।

सुनते नहीं ;
हाँ... हूँ....तक
कुछ नहीं
अतिथि का निमंत्रण स्वर
कुछ नहीं मेल जोल में
कहीं भी अब ।

ना... ना उन्हें
और मत डराओ
कोरो़ना काल ।
मत सताओ
वे अब अभ्यस्त
कोरो़ना के साथ ।

यह जीवन को ताकता
एक नाम मात्र का भय ।

देखो -देखो आकाश में
उड़ा जा रहा
पक्षियों का दल
गोरैया का मेलजोल
खिड़की की रेलिंग पर

चीं.. चां ध्वनि
युगल का खेल ।

बजती नहीं चटशाल में घंटी
घर के आगे पें. पा या .....टीं टीं
शायद आवाज :
बच्चे कंप्यूटर स्क्रीन पर
पढाई कर रहे ।
नहीं जाना स्कूल
ढोना नहीं बस्ता
पीठ का भार कम हुआ
चटशाला लेना हाजिरी
अर्थहीन हुआ ।

अर्थहीन नियमित जाना
बच्चे अब पढ़ेंगे करेंगे पढ़ाई ।
घर में खेल करते हुए
अभिभावक के लौटे दिन
करेंगे खूब पढ़ाई ।

नहीं... अब शहर में कोलाहल
कोई भोंपू कारखाने में

शहर अब सोया
गाढ़ी नींद में
मत करो उसे परेशान,
आहा शीतल पवन
सुन्दर मेघ बह रहे !

बीता आषाढ़ सावन
भादों की तोफा चांदनी रात के नहीं,
शरत भी विरस विषण्ण
यहाँ वहाँ सब जगह
कोरो़ना भूताणु की उपस्थिति !

◆

(चौदह)

आओ करोना जीयें
सतर्क हो आगे बढ़ें
पेट के लिए खेल करें
महा मृत्यु नहीं
महा जीवन संगीत गायें ।

सारी सतर्कता में धीरे -धीरे
जीवन खुला
मानव मुक्त हुआ
तब जीवन गीत गाया ।

सब पर भी
रोजगार के
खुल जायेंगे रास्ते
प्रवासी कारीगर
नियुक्त हुये
गली -गली में
जीवन रंगरंगीला ।

आओ सतर्क हो जीवन जीयें
पुराने नीति नियम छोड़
नहीं अभ्यर्थना
नहीं अभिनन्दन ,
नहीं मिलाना हाथ
नहीं करें आलिंगन

एक साथ नहीं भोजन
न हो समूह भोजन ।

पता नहीं कोरोना किसे
करता आक्रमण
अपने जीतने में
रौंदता जाता जीवन का फूल वन ।

शक्ति प्रतिरोधक में आओ
करें उसे समूल परास्त
डरना नहीं कोरोना से
शेष करें उसका जैविक युद्धास्त्र
शरीर में रहे
नित्य नियमित
प्रतिरोध का समराभ्यास ।

जीने का अर्थ नहीं डरना या हारना
जीना तो है चिरकाल जूझना जीतना

अवरोध, संगरोध
भोग का छोड़ खेल
खुला कर दो शहर
धीरे-धीरे टूट जाय
नीरवता का ताश घर ।

◆

(पंद्रह)

बचाओ .... बचाओ ....
कोटि राजा के मुकुट मणि
गजपति महाराज कर रहे विनती
बचाओ महाबाहु
हे पतितपावन
पतित उद्धार को खड़े हो,
हट जाय जगती का रूंदन ।

रुक कर भी
रुकी नहीं घोषयात्रा
रत्नवेदी से जन्मवेदी तक
रथ पथ हुआ एकाकार ।

छप्पन व्यंजन खाते राजा रंक
मौसी घर के पोड़ पिठा का मोह
छोड़ सके नहीं कोरो़ना का भय ।

उत्कलीय जीवन से
दूर हुआ झूठे भूत का भय ।
करोना विरुद्ध में
लड़ाई करने
विश्व ने सोचा उपाय ।

बेक्सीन और औषध का
हो रहा तेजी से आविष्कार
परीक्षा निरीक्षा करेंगे
कोरो़ना का श्रेष्ठ उपचार ।

अकाल मृत्यु का खेल
यहीं रोक रुकेगा
जीवन अमृत पुत्र
मिला है जीने को
संक्रमण अब ,
शेष होगा !
कोरो़ना होगा शेष।

हो जाये नूतन सभ्यता का उदय
जहाँ नहीं चाहिए
यांत्रिक यतन
एकात्म हो विश्व चेतना
योगमाया से सब जुड़ें रहना।

◆